Summer POP: Creepers

Download

Document outlining Package of Practices for Horse Gram (Kulthi) cultivation in Rabi season

- Read report on Summer POP: Creepers

Read report on Summer POP: Creepers

गरमा पी.ओ.पी.

फसल का नाम: लत्तर फसल (*Creepers*)

10 डिसमिल जमीन के लिए

लत्तर फसल :- लत्तर फसल में मुख्यतः कई फसल आते हैं जैसे- लौकी, खीर, करेला, झींगा, नेनुवा इत्यादि
उद्देश्य:

- लत्तर फसल भारत में उगाई जाने वाली महत्वपूर्ण सब्जी की फसल है |
- अपने पोषक गुणों ओर विविध उपयोगो के कारण लत्तर की फसल सबसे महत्वपूर्ण सब्जी है |
- लत्तर फसल की खेती सालों भर आर्थिक आय में मदद करती है |

खेती करने का मुख्य समय:

- लत्तर फसल की खेती सामान्यतः पुरे वर्ष की जाती है | गरमा मौसम में लत्तर की फसल लगाने का मुख्या समय जनवरी के दुसरे सप्ताह से फरवरी के दुसरे सप्ताह तक नर्सरी एवं रोपाई के लिए उत्तम समय माना जाता है |

उद्देश्य

- बीज उपचार करने से बीज जनित रोग से बचाव होता है |
- मिट्टी के फफूंद से नया पौधा को बचाव होता है |
- तरीका या विधि
- बीज उपचार के लिए जैविक में बिजाम्रित से या रासायनिक में बेविस्टीन 2 ग्राम/kg या थिरम 3 ग्राम/Kg का प्रयोग अच्छा होता है |

3. बीज का दर:- **10** डिसमिल जमीन में बीज की मात्रा

- प्रति गढ़ा में 2 से 3 पौधा के आधार पर
- लौकी :- 272 गढ़ा, बीज 100 से 120 ग्राम
- खीरा :- 272 गढ़ा, बीज 25 से 30 ग्राम
- करेला :- 272 गढ़ा, बीज 100 से 120 ग्राम
- झींगी :- 272 गढ़ा, बीज 70 से 90 ग्राम
- नेनुवा :- 272 गढ़ा, बीज 40 से 50 ग्राम

4. नर्सरी बनाने की विधि:-

पोलीटियूब में नर्सरी का फायदा :-

- पटवन करने में किसान के समय का बचत |
- कम बिज में ज्यादा पौधा एवं स्वस्थ पौधा |
- देख-रेख में सुविधा (समय पर पटवन, निकावान, समयपर दवा का प्रयोग, पाला से बचाव) |
- समय से पहले ज्यादा उपज-ज्यादा फायदा |
- खेत खाली नहीं रहना

पोलीटूयूब में बिचड़ा तैयार करने के लिए सामग्री एवं विधि:-

सामग्री:- पोलीटूयूब, बीज, केचुवा/गोबर खाद, ट्रैकोडारमा इत्यादि

बिचड़ा तैयार करने की विधि:-

- लत्तर फसल के लिए पोलीटूयूब में बिचड़ा तैयार करने के लिए केचुवा खाद एवं मिट्टी को बराबर मात्र में मिलाना है |
- 10 डिसमिल जमीन में बिचड़ा तैयार करने के लिए खाद एवं मिट्टी के मिश्रण में 200 ग्राम ट्रैकोडारमा विरिडी के चूर्ण को मिलान है |
- तैयार मिश्रण को पोलीटूयूब में भरने के बाद एक-एक बीज डालना है |
- दुसरे या तीसरे दिन (48- 72 घंटे बाद) अंकुरण आने के बाद रिडोमिल –गोल्ड 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिला कर फ़ुहारा से छिडकाव करना है |
- दो से चार पत्ता आने के बाद NPK 1919 को 80 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में मिला कर सिंचाई करने से पौधे की बढ़वार अच्छी होती है |
- हर 7 दिन के अन्तराल पर एडमायर (कीटनाशक) 2 ग्राम 15 लीटर पानी में या नीमास्त्र एवं साफ़ (फुफुन्दनाशक) 2 ग्राम प्रति लीटर पानी या बिजम्रित का छिडकाव करना चाहिए |
- 20 - 21 दिन में नर्सरी में पौधा मुख्य खेत में लगाने के लिए तैयार हो जाता है |

7. खाद/उर्वरक का प्रयोग:

- 10 डिसमिल जमीन में लत्तर फसल फसल के लिए 2-3 क्विंटल सड़ी हुई कम्पोस्ट खाद खेत में अंतिम जुताई के समय मिला देना चाहिए।
- सिंचाई युक्त जमीन के लिए नाइट्रोजन 70 किलोग्राम, फास्फोरस- 40 किलोग्राम एवं 25 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टर के दर से देना चाहिए |

10 डिसमिल जमीन के लिए रासायनिक खाद की मात्रा:-

पोषक तत्वा		खाद की मात्रा	
• नाइट्रोजन	• 6 किलो	• यूरिया	• 10 किलो
• फोस्फोरस	• 4 किलो	• DAP	• 9 किलो
• पोटास	• 2 किलो	• पोटास	• किलो

- सिंचाई युक्त जमीन के लिए नाइट्रोजन का आधा भाग तथा फोस्फोरस एवं पोटास का पूरा भाग खेत तैयार करते समय प्रारंभिक (बेसल) डोज़ के रूप में करना चाहिए | नाइट्रोजन की शेष मात्रा दो समान विभाजन में देना है - रोपाई के 30 दिनों बाद और रोपाई के 50-60 दिनों बाद ।
- पौधा में फुल आते समय सूक्ष्मपोषक तत्व का छिडकाव करें ।

8. सिंचाई प्रबंधन:

- लत्तर फसल की अच्छी उपज के लिए खेत में कम से कम 5 से 6 बार सिंचाई की आवश्यकता होती है | मिट्टी के प्रकार को देखते हुए सिंचाई की संख्या बढ़ भी सकती है |
- अगर फसल लगते समय मिट्टी में नमी कम हो तो हलकी सिंचाई जरुर करनी चाहिए |

9. निकाई – गुड़ाई एवं खर-पतवार नियंत्रण:

<table>
<tr>
<td>Leaf Curl Virus (पत्ती सिकुरण)

 </td>
<td>संक्रमित पौधों की पत्तियां छोटी होती हैं और ऊपर की ओर मुड़ी पिली दिखने लगती हैं
पौधा बौना दिखाई देता है
आमतौर पर संक्रमित पौधों पर फुल विकसित नहीं हो पाते हैं</td>
<td>संक्रमित पौधों को निकाल देना चाहिए और आगे फैलने से बचने के लिए इन्हें जमीन में दवा कर या आग में जला कर नष्ट कर देना चाहिए | सफ़ेद मक्खी को पकड़ने के लिए Yellow sticky Trap 12 इकाई/ हे के हिसाव से खेत में लगाये | जैविक दवा के रूप में निमास्त्र, अग्निअस्त्र या हांड़ीकथ 40-50 ml प्रति लीटर पानी में मिला कर, 10 दिन में बदल बदल कर करना चाहिए |</td>
</tr>
<tr>
<td>Fruit Borer- फल छेदक

 </td>
<td>यह कीट फलों में छेदकर इनके पदार्थ को खाती हैं तथा आधी फल से बाहर लटकती नजर आती है | एक कीट कई फलों को नुकसान पहुंचाती हैं |</td>
<td>संक्रमित फलों को इकट्ठा करके इन्हें जमीन में दवा कर या आग में जला कर नष्ट कर देना चाहिए | 12 इकाई / हेक्टेयर में फेरोमोन ट्रैप लगाएं जैविक दवा के रूप में निमास्त्र, अग्निअस्त्र या हांड़ीकथ 40-50 ml प्रति लीटर पानी में मिला कर, 10 दिन में बदल बदल कर करना चाहिए |</td>
</tr>
</table>

<table>
<tr>
<td>जुगनूकीट
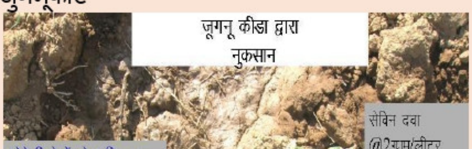</td>
<td>यह कीट पत्तियों को खाता है जिससे पौधों की बढ़त कम हो जाती है एवं उपज भी प्रभाबित होता है |</td>
<td>जैविक दवा के रूप में निमास्त्र, अग्निअस्त्र या हांड़ीकथ 40-50 ml प्रति लीटर पानी में मिला कर, 10 दिन में बदल बदल कर करना चाहिए |</td>
</tr>
</table>